

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṃ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayi

sakalalokañāyike

śāṅkari śrīrājārājeśvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 1 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

उत्तुक्काडु वेङ्कटकवि विरचित कामाक्षि नवाररण कीर्तनानि

(typeset using
L^AT_EX 2_ε , *pdfL^AT_EX*, and *dvng Type I fonts*)

©May 2003

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 2 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

1. gaṇeśa dhyānam

श्रीगणेश्वर जय जगदीश्वर

गणेश ध्यान कृति

रागम् : षण्मुखप्रिय (५६) ताळम् : आदि

पल्लवि

श्रीगणेश्वर जय जगदीश्वर
सेवितजनमुख वरद अभयकर

मध्यमकाल साहित्यम्

श्रिविद्योपासनबोधकर
सदानन्द चिन्मयाकार जय

अनुपल्लवि

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 3 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

यागयोगफलकारक पञ्चायतनप्रपूजानायक
रागरहितमानसीकवाचिककायिकधर्मादिफलदायक

मध्यमकाल साहित्यम्

एकदन्त गिरिराजसुतासुत
हिरण्यमणिकुण्डलशोभकर
श्रीकरयामिनीकरशेखर -
हितकर दानवकुलभीकर जय

चरणम्

अनलसाल अन्तर्गतविघ्न -
यन्त्रहरण तन्त्रसुन्दर
मनसिजकोटिपराभव वकुळ -
मालिकाभरण सुन्दर
धनकनकवाहनाद्यैश्वर्य -

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 4 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

दायक सदया सागर
विनतसुरमुनिगण जयजय घोष
वेदपारावारविहार

मध्यमकाल साहित्यम्

घनसमान सेनालहरीयुत
गजमुख विशङ्कभीतिहर जय
कान्तिसुन्दर तुण्डलोलकर
ताण्डवकोटि दिवाकरसमान
सन्निभ कोटिकोटि हेरम्बा नायक दयाकर
आमोदप्रमोद सेनानायक
नायकवर वृन्दाकर जयशिव



2. vāñchasi yadi

वाञ्छसि यदि कुशलम्

नवावरण ध्यान कीर्तनम्

रागम् : कल्याणि (६५) ताळम् : आदि

पल्लवि

वाञ्छसि यदि कुशलं मानस पर-

मानन्दरससिन्धुमध्यमणि-

बिन्दुचक्रनिलयां निरन्तरं

ध्यायेत श्री कामाक्षीम्

अनुपल्लवि

काञ्चीनगरविहारां शिव-

कल्याणगुणगणसाराम्

Home Page

Title Page

◀ ▶

◀ ▶

Page 6 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

मध्यमकाल साहित्यम्
कमनीयकल्पितनिज मायया
कारणकार्यविधायकधीराम्
चरणम्

निजमोदसदारमणीयशिवा -
मृतनामजपां सुभगाम्
गजमुखगुरुगुहविनुतां सुमुखां
करुणां पुष्पितकल्पलताम्

मध्यमकाल साहित्यम्
गानकलां कुशलां अवबोधन -
गन्धर्वसमाराधितसुस्वर -
माणिक्यमनोहरवीणाधरणां

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadī

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayi

sakalalokañyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page



Page 7 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

सुरनुतसरसीरुहचरणाम्



3. santataṁ aham

सन्ततं अहं सेवे श्री

प्रथम नवावरणं - त्रैलोक्य मोहन चक्रम्

रागम् : देशाक्षि (२९) ताळम् : आदि

पल्लवि

सन्ततं अहं सेवे श्री
त्रैलोक्यमोहनचक्रनिलये

मध्यमकाल साहित्यम्

सर्वसिद्धिसमूहसेविते सकलागमनुते लोकभाविते

अनुपल्लवि

चिन्तामणिश्रीपुरमध्ये

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadī

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeshvari

nīlahita ramañī

sadānandamayī

sakalalokañāyike

śāṅkari śrīrājāreśvari

natajanakalpavallī

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 9 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

उत्तुङ्गशोभितवेदिके
बिन्दुचक्रनिलये करुणालये

मध्यमकाल साहित्यम्

ब्रह्मादिप्रमुखसंमानित-
महनीयमरकतमालिके

चरणम्

ब्राह्मीमाहेश्वर्याद्यष्ट-

देवीसमूहखेलित प्रथम-

प्राकारे वेदसारे

संक्षोभिणीविद्राविण्यादि-

दशमुद्रागणसन्नुते

रम्यत्रिपुरादिचक्रेश्वरि

राजराजेश्वरि शिवकामेश्वरि

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayi

sakalalokañyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavalli

haladharānujam

Home Page

Title Page



Page 10 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

मध्यमकाल साहित्यम्
लम्बमानशदयाष्टिकारत्न-
मालिनि प्रकटयोगिनि



4. bhajasva śrī

भजस्व श्री त्रिपुरसुन्दरी

द्वितीयावरणं - सर्वाशापरिपूरक चक्रम्

रागम् : नादनामक्रिय (१५) ताळम् : आदि

पल्लवि

भजस्व श्री त्रिपुरसुन्दरि
पाहि षोडशदलसर्वाशा-
परिपूरकचक्रेश्वरि मामपि

अनुपल्लवि

निजसुधालहरीप्रवाहिनि
नित्यकामेश्वरि

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayi

sakalalokañyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavalli

haladharānujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 12 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

मध्यमकाल साहित्यम्
गजमुखजननि शशधरवदनि
शिशिरितभुवनि शिवमनोरमणि
चरणम्

अतिसुन्दरसव्यकरतल
पाशाङ्कुशधरणे शशिकिरणे
विधिहरिहरनुतचरणे वेद-
वेदान्तवितरणे
श्रुतिनिगमागमरमणे हार-
केयूरकिरीटकनकाभरणे
मध्यमकाल साहित्यम्
अत्यद्भुततपनीयफल इव

gaṇeśa dhyānam
vāñchasi yadi
santataṁ aham
bhajasva śrī
sarvajīva dayāpari
yogayogeśvari
nīlahita ramañī
sadānandamayi
sakalalokañyike
śāṅkari śrīrājarājeśvari
natajanakalpavalli
haladharāñujam

[Home Page](#)

[Title Page](#)



Page 13 of 38

[Go Back](#)

[Full Screen](#)

[Close](#)

[Quit](#)

कुचमण्डलमण्डितहारे



5. sarvajīva dayāpari

सर्वजीव दयापरि

तृतीयावरणं - सर्वसंक्षोभण चक्रम्

रागम् : शुद्धसावेरि (२९) ताळम् : आदि

पल्लवि

सर्वजीवदयापरि अम्ब शङ्कर-

हृदयेश्वरि सदानन्दशिव-

बीजमन्त्रेश्वरि

सर्वदा सदा त्वामेव नमामि

अनुपल्लवि

सर्व संक्षोभणाष्टदल-

पद्मचक्रेश्वरि गुप्त-

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogेश्वari

nīlahita ramañi

sadānandamayī

sakalalokañyike

śārikari śrīrājarāješvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 15 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

तरयोगिनि अनङ्गकुसुमाद्यष्ट -
देवीसमूह मोहिनि
परमन्त्रतन्त्रेश्वरि व्यापक -
भण्डासुरच्छेदिनि
चरणम्

आनन्दाकर्षितस्थूलसूक्ष्ममय
बाह्यान्तरप्रकाशिनि
ज्ञानमयस्वप्रकाशरूपिणि
कामकलाप्रदर्शिनि
दीनजनरक्षणि सर्वाकर्षिणि
अणिमादिसिद्धिनतप्रदायिनि
मध्यमकाल साहित्यम्
नानाविधयन्त्ररूपिणि

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṃ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayi

sakalalokañyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀ ▶

◀ ▶

Page 16 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

नामरूपमन्त्रविमर्शिनि
गानरूपतन्त्रीसमन्वित
वीणाधारिणि नारायणि



6. yogayogeśvari

योग योगेश्वरि त्रिपुरवासिनि

चतुर्थावरणं - सर्वसौभाग्यदायक चक्रम्

रागम् : आनन्दभैरवि (२०) ताळम् : खण्ड त्रिपुट

पल्लवि

योगयोगेश्वरि त्रिपुरवासिनि

मध्यमकाल साहित्यम्

योजय मामपि तवपादपद्ममूले

मुनिजनानुकूले

श्रीविद्याज्ञानभक्तिनाद

अनुपल्लवि

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramaṁī

sadānandamayī

sakalalokaṅyike

śāṅkari śrīrājājeśvari

natajanakalpavalli

haladharānujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 18 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

त्यागेशहृदयेश्वरि प्रसिद्ध
चतुर्दशकोणेश्वरि
भोगमोक्षवरदायकि सर्व-
सौभाग्यदायकचक्रेश्वरि
मध्यमकाल साहित्यम्
आगमादिसकलशास्त्रार्थरूपे
अखिलभुवनपालितवरप्रतापे
नागरत्नतालपत्रकनकाभे
नतजनमनपर करुणायुतशोभे
चरणम्

संप्रदाययोगिनीपरिवारे
सदाशिव हृदयविहारे अम्ब
हंसतूलिकातल्पसारे महा-

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañi

sadānandamayi

sakalalokañyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 19 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

मायामन्त्रार्थसारे एकाम्र-
तरुमूले श्रीकाञ्चीपुरक्षेत्रे
पवित्रे ताम्रवर्णाङ्गमतङ्गमुनि-
पुत्रे सुचरित्रे

मध्यमकाल साहित्यम्

ईकारकामकलामन्त्रविहारे
ईश्वरतत्त्वविचारे आनन्दादि
अधिकरणभाव भुवनात्मकानन्द-
रूपे चतुर्दशप्राकारे



7. nīlālohita ramaṇī

नीललोहित रमणी

पञ्चमावरणं - सर्वार्थसाधक चक्रम्

रागम् : बलहंस (२८) ताळम् : खण्ड ध्रुवम्

पल्लवि

नीललोहितरमणी जय जय जय त्वत्तो

जगद्भवति त्वय्येव तिष्ठति

लयं गच्छति सर्वार्थसाधक-

चक्रेश्वरि जय

अनुपल्लवि

श्रीललिते कुलोत्तीर्णयोगिनी-

समूहस्तुतिनिरते परदेवते

वशित्वसिद्धिवरदे विधीन्द्रविनुते
मध्यमकाल साहित्यम्
कोलाहलनवयौवननिर्भरकुङ्कुम-
कळभाङ्कितकुचमण्डले
सेवितमुनिजनमण्डले गन्ध-
तमस इव भवतारकवरमित्र
समरत्नकुण्डले मङ्गलसंपद-
कामितार्थफलदायिनि दुःखविमोचिनि
सर्वान्मोदिनि शूलिनि सरसिजमालिनि
चरणम्

बहिर्दशारचक्रस्थितवरे
निर्विशेषपरतत्वदीपिके
साम्यादिपञ्चस्थिति सिंहासनस्थिते

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadī

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahīta ramaṁī

sadānandamayī

sakalalokaṁyike

śāṅkari śrīrājājeśvari

natajanakalpavallī

haladharaṁujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 22 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

महनीयसविकल्पसमाधिसुखवर -

बिन्दुपीठनिलये

सदा वरदसंकल्पकरवलये

करुणालये कञ्चीपुरालये

मिहिरकोटिसमशोभायुते

मृदुमन्दहासितमुखे

विश्वात्मक ऐं क्लीं सौः

बीज वर मन्त्रार्थबोधके चन्द्रमुखे

मध्यमकाल साहित्यम्

अहं ब्रह्म तत्त्वात्मकवितरण

निर्विकल्पतरचिन्तामणिमध्ये

सच्चिदानन्दपरविद्ये अत्यतिशय -

शुभफलवरतरुसमूह

कदम्बवनमध्ये आनन्दनृत्ये

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṃ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahīta ramaṇī

sadānandamayī

sakalalokaṇāyike

śāṅkari śrīrājārājeśvari

natajanakalpavallī

haladharānujam

Home Page

Title Page



Page 23 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

द्युतिपल्लवकरकोमलधृत
पाशाङ्कुशचित्रे भण्डासुर-
संहारचरित्रे



8. sadānandamayi

सदानन्दमयि चिन्मयि

षष्ठावरणं - सर्वरक्षाकर चक्रम्

रागम् : हिन्दोळम् (२०) ताळम् : खण्ड मत्स्यम्

पल्लवि

सदानन्दमयि चिन्मयि सदाशिवमयि
दशत्रिकोणयुतसर्वरक्षाकरचक्रेश्वरि

अनुपल्लवि

सुधासागरबिन्दुमध्यनिलये निखिलकलालये
द्वैतनिवारणाद्वैतालये काञ्चीपुरालये

मध्यमकाल साहित्यम्

सनातनज्ञानशक्तिप्रदायिनि सुखदायिनि
परमेशहृदयनिवासिनि त्रिपुरवासिनि सुवासिनि

चरणम्

पञ्चकोशान्तर्गतप्राणनिलयप्रकाशिनि
निगर्भयोगिनि त्रिपुरमालिनि गुणशालिनि
प्रपञ्चशुभद सर्वमहाङ्कुशामुद्रारूपिणि

मध्यमकाल साहित्यम्

कुञ्जरमुखगुहजननि नवनीरजनयनि नीरज-
निकरशेखररञ्जनि मञ्जुळवचननिरञ्जनि



9. sakalalokañāyike

सकललोक नायिके

सप्तमावरणं - सर्वरोगहर चक्रम्

रागम् : आरभि (२९) ताळम् : आदि

पल्लवि

सकललोकनायिके त्वामेव
शरणं प्रपद्ये

मध्यमकाल साहित्यम्

सर्वरोगहरचक्रमयि
सर्वानन्दमयि मङ्गळमयि

अनुपल्लवि

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadī

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayī

sakalalokañāyike

śārikari śrīrājājeśvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 27 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

अ क च ट त प य र ल व शादि क्षान्त

अक्षरमयि वाङ्मयि चिन्मयि

शुकनारदकुम्भजमुनिवर

स्तुतिदायकजनसन्नुते

मध्यमकाल साहित्यम्

नागनायक शतदशारफण

लोकवहितधरकरवलये

लोकलोकसंमोहित हितकर

सिद्धिबुद्धिनतपुरनिलये

चरणम्

भवरोगहरवैभवे

परमकल्याणगुणनिकरे

नवरसालङ्कारकाव्यनाटक

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṃ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayi

sakalalokañāyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 28 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

वर्णिते शुभकरे
कुवलयदलनवनीलशरीरि
गोविन्दसोदरि श्रीकरि
शिवहृदयकमलनिलये
त्रिपुरसिद्धीश्वरि नतश्रीनगरे
मध्यमकाल साहित्यम्
अवनतरहस्ययोगिनिकूले
शतदिनसमकर मुखद्युतिजाले
भुवनप्रसिद्धहीकार -
कामेश्वरबीजमन्त्रलोले



10. śāṅkari śrīrājarājeśvari

शङ्करि श्री राजराजेश्वरि

अष्टमावरणं - सर्वसिद्धिप्रदायक चक्रम्

रागम् : मध्यमावति (२२) ताळम् : आदि

पल्लवि

शङ्करि श्रीराजराजेश्वरि जयशिव
सर्वसिद्धिप्रदायकचक्रेश्वरि
कामेश्वरि वामेश्वरि भगमालिनि
सन्ततं तव रूपं अहं चिन्तयामि

अनुपल्लवि

मङ्गलकरकुङ्कुमधर मन्दस्मित -

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadī

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeshvari

nīlahita ramañī

sadānandamayī

sakalalokañyike

śāṅkari śrīrājāreśvari

natajanakalpavallī

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 30 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

मुखविलासिनि

अङ्कुशधनुः पाशदण्ड -

भासकरचक्रनिवासिनि

मध्यमकाल साहित्यम्

भृङ्गि सनकमुनिजनवर

पूजितपरमोल्लासिनि

बुधजन हितकारिणि परपोषणवह्निवासिनि

वेङ्कटकवि हृदि सरसिज

वितरणपटुतरभासिनि

विधिहरिहरसुरसन्नुत

नित्यान्तरप्रकाशिनि

चरणम्

परिकीर्तितनादान्तरनित्यान्तर

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogेश्वari

nīlahita ramañi

sadānandamayī

sakalalokañāyike

śānikari śrīrājarāješvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 31 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

अङ्गरक्षाकरत्रयप्राकारे
अतिरहस्ययोगिनीपरिवारे
गिरिराजवरतनये सृष्टि-
स्थित्यादिपञ्चकारणकृत्येन्द्र-
गणसंमानिते यतीन्द्रगण संमोदिते
शरणागतनिजजनवरदे संकल्प
कल्पतरुनिकरे
सहजस्थितिसविकल्पनिर्विकल्प-
समाधिसुखवरदे

मध्यमकाल साहित्यम्

परतत्त्वनिदिध्यासन

वितरणसर्वबीजमुद्राधिपते

भण्डासुरमदखण्डनवैभवे

चिन्तामणिनगराधिपते

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogेश्वari

nīlahita ramaṁ

sadānandamayi

sakalalokaṁyike

śaṅkari śrīrājarāješvari

natajanakalpavalli

haladharānujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 32 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

तरुणारुणमुखकमले सकले
सारसहितविद्याधिपते
सदा चिदम्बरनर्तनपदयुग -
समकरनटनाधिपते जय शिव



11. natajanakalpavalli

नतजनकल्पवल्लि

नवमावरणं - सर्वानन्दमय चक्रम्

रागम् : पुन्नागवराळि (८) ताळम् : आदि

पल्लवि

नतजनकल्पवल्लि अवनत
सर्वानन्दमयचक्रमहापीठनिलये
सदा वितर वितर तव सुधाकर
दृष्टिं मयि मरकतमयि

अनुपल्लवि

स्मितचारु नवमल्लीमन्द-
धवळमुखकमलवल्लि

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadī

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogēśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayī

sakalalokañāyike

śāṅkari śrīrājāreśvari

natajanakalpavallī

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 34 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

मध्यमकाल साहित्यम्
शतमखादिसुरपूजितसमस्त
चक्रेश्वरि परमेशमनोहरि
परात्परातिरहस्ययोगिनि
महात्रिपुरसुन्दरि माहेश्वरि
चरणम्

चिदाकारतरङ्ग आनन्द
रत्नाकरे श्रीकरे
सदा दिव्यमानवयोगिगण -
गुरुमण्डले सुमङ्गले
शिवगणनतपादपद्मयुगळे
विकले सुधासिन्धुसमशोभित
श्रीपुरबिन्दुमध्ये शरदिन्दुमुखे

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramaṇī

sadānandamayi

sakalalokaṇāyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavallī

haladharānujam

Home Page

Title Page



Page 35 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

मध्यमकाल साहित्यम्
सदाचारभूसुरसुरसज्जन
नारदादि गन्धर्वघोषपरसार
सारनवावरणगान
ध्यानयोगजपतपरसिके



gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogेश्वari

nīlahita ramañi

sadānandamayī

sakalalokañāyike

śāñkari śrīrājāreśvari

natajanakalpavalli

haladharānujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 36 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

12. haladharānujam

हलधरानुजं प्राप्तुम्

नवावरण फलस्तुति

रागम् : मणिरङ्गु (२२) ताळम् : आदि

पल्लवि

हलधरानुजं प्राप्तुं वयम्

आगता देहि देवि श्री

अखिलाण्डेश्वरि गुरुगुहजननि

आनन्दसुखवरप्रदायिनि श्री

समष्टिचरणम्

जलदपटलद्युतिगात्रं निज-

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadī

santataṁ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayī

sakalalokañāyike

śāñkari śrīrājājeśvari

natajanakalpavallī

haladharāñujam

Home Page

Title Page

◀

▶

◀

▶

Page 37 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

शरणागत उत्तार गोत्रं
दलकमलविपुल नेत्रं
सनकादिमुनिस्तुतिपात्रम्
अखिलाण्डेश्वरि गुरुगुहजननि
आनन्दसुखवरप्रदायिनि (श्री)

कृतहैयङ्गवचोरं अभि-
केशवं पूर्वं रामावतारम्
मृदुमधुराधारशोभमुदारम्
मोहनमधुरिपुयमुनाविहारम्
अखिलाण्डेश्वरि गुरुगुहजननि
आनन्दसुखवरप्रदायिनि (श्री)

कालियफणपदन्यासं अपि
कमलाकुचकुङ्कुमधरभासम्
खेलितगोकुलवासं अपि

gaṇeśa dhyānam

vāñchasi yadi

santataṃ aham

bhajasva śrī

sarvajīva dayāpari

yogayogeśvari

nīlahita ramañī

sadānandamayi

sakalalokañyike

śāṅkari śrīrājarājeśvari

natajanakalpavalli

haladharāñujam

Home Page

Title Page



Page 38 of 38

Go Back

Full Screen

Close

Quit

कीर्तिगायकदासानुदासम् अखिलाण्डेश्वरि गुरुगुहजननि

